

श्रीभारस्वीत

आशा मरुवाथि	
1/03	
ASHA ARCHIVES	

भास्व

१

श्रीगणेशाय नमः ॥ ॥ प्रनम्य चादौ गणनाय केचन दात्मजं विदुः विना सनंच ॥ संचेपतो लोकहिताय व
 क्षेकवापि भारस्वतिनामकेचनं ॥ १ ॥ नत्वा मुणेरेश्वरानारविन्दं श्रीमात्मनानन्देति प्रसिद्धं ॥ तं भास्वतिः
 शिष्यहितार्थमाह साकेविहिंसि पक्षैवेके १०२१ ॥ २ ॥ अथ प्रवक्षेमि हि रोपदेशान्तसुर्यसिद्धांतस
 मासमासाः ॥ शाखाद्वयिण्डुसूर्यस्य दिव्य १००० स्तानाग्नि ३४६ युक्तो १००० विभक्तः ॥ ३ ॥ लघ्वं न गैसे
 वि० नमंगद युक्तसूर्यादिसंभवत्सरपालकस्यात् ॥ शेषं हरे प्रोत्पृथगाज्ञासा १००० लघ्वं वेरोदीयिको ध्रुवा
 स्यात् ॥ ४ ॥ सहस्र १००० तिघ्रखविधु १००० तिनोधस्वसिद्ध २४० भागो नवचक्र २००० सेख ॥ खंपंच १००० संयुक्तद
 स १००० सुविश्वदाहभाषो ८१ भ्यदिकशसांक ॥ ५ ॥ रुद्रा ११११ नो वेद ४३ सेव चतुषष्टि

राम

१

भास्व

१

वीधियासप्र० हतावशेषा॥ मुके१०२ वाचसपति३ सूर्य४ सोम५ शनैश्चराद रा० ७ कमशोभवन्ति॥ १॥ सा
कोनवादिद्वुकुशानु३१० युक्तकलेर्भवन्त्याह गणान्तर्गतं विष्णुर्भोलोचनवेद४२०० हिनशास्त्रादपि
गुक्तधितमएव॥ २॥ अशोक१२ निघो रविमोस युक्तसप्तवसेषा० एविमासनाथा॥ श१५ क२ सूर्या३२४ सु
रेज्य५ सोरिदचन्द्र० युगासावनमासत्वे॥ ३॥ अदृष्टकवेश११० गुणासरागा० परमांक६३ लब्धिय
चन्द्र१५ युक्त॥ तत्सङ्घि६० सेषादियुभिर्युगानिलधानिसेवो गिरसस्पमास्य॥ ४॥ अदृष्टे स११० गुणा
देयापंचचन्द्रेयुलोचना २५१५ भास्वतिकरणोप्रोक्ता संमितिमिहि रोदिता॥ ५॥ शास्त्रद्वपिराडोवसुवं
निबद्ध२८ आशसितरस्मिंज्वलणो३१ महिज॥ सताहतदाद सरावृषके१२०० सेवो विवाशे स५४

सी

राम

२

उत्तरे ह्यन्दात् ॥ ६ ॥ जो चं यः यास्मि २०० मधोदश १० घाति थिन्दु ११ पल १ ग र सास्मि २६ द हिन सताहते
ध १०० यन वा ९० प्रनेत्रे सूर्या १२२० जिवोदन या १२० युक्त ॥ ७ ॥ खेवु स्वा ५० घो क स गणि ३५८ युक्त
सितोत्र माद्यं कुनये १६१ सत १० घात् ॥ खवेद ४० तिघोदि नवेव ५८४ युक्त सतिर्द स १० घा सहित प्रश
कै ॥ ८ ॥ भोम ह्यकिन रसा ३३८ पलेक १ सहितान वा कुनागे तुव १८२ स प्राग्नि ३ प्रयुता गुरु शशि
दिशो १०१ नदा ९ चितो वैकुवे ॥ पुके यो मम रा ६ यो ७५ ग गु रा युक्त ३ सोरे ववेदा ४० पले लोका वि
४३ यन वा ६ यो २९० जिन २४ युता रा कुर्गते व सरे ॥ ९ ॥ शकाद्यो गुणि तो रामे ३ भूमि १ यो सुनी
नाहत ७ रयादि क सतो राजा मंत्री तस्य चतुर्थ ॥ १० ॥ साको रसा गि ३६ संयुक्तो व सुभिर्भी गमाह

३
भा. सु.

रेतः॥ अनंतादिक्रमेणैव च हो नागा प्रकीर्तिता ॥ ११ ॥ अत्र १ नो वासुकि २ पद्मो ३ महापद्मश्चतुर्थः ५ कुलिरद-
कर्कटः ७ संरो ८ आहो नागा प्रकीर्तिता ॥ १२ ॥ साकशशां क १ संयुक्तो मुनिः ७ भिन्ना माहुरितः ॥ आवहदिक्रमे-
नैव स प्रवाता प्रकीर्तिता ॥ १३ ॥ आवह प्रवहैव २ संवहो ३ विवह ४ लथा ॥ उदहो ५ निवहो ६ वायुः ७ स प्र-
वाता प्रकीर्तिता ॥ १४ ॥ शाक स राजि ३ ५ संयुक्तो वेदे ४ नैवावशेषितः ॥ आवर्ते १ वदि संवर्तो २ पुष्कर ३ दो-
श ४ मत्तुद ॥ १५ ॥ आवर्ते तिर्जालो मेघ संवर्ते वायु पुष्कर ॥ पुष्करे ६ व्क ग व द्दि दो रो श-
स्पवति महि ॥ १६ ॥ युग्माज ३ गोवि २ न १ शाने शशां के रविर्यदा कर्कट कं प्रयाति ॥ जलं सता १००
ठं हरि ५ कार्मुके ६ क ५ युक्तं हि कन्याद् मृग १० यो रसि १०० ती ॥ १७ ॥ कुलिर ४ कुं भा ११ लिप्तुला ७

शम
३

गतेऽदो वजेद्विषयन ८६ ति सदा नि ॥ समुदेद स १० भाग षष्ठ भाग ८ श्वैव पर्वतेषु विवस्वतुष्टे ४ भाग
सम्यग्ययति वासव ॥ १७ ॥ दत्तजा जन वि सि रं सित योजना मा प तं ॥ आठ कं तु विजाति यान
व व वि ति वा स व ॥ १८ ॥ शुभो न ३ सुणि त रा कं स ॥ मिभा ग मा हरे त् ॥ विवध मा ह त २ कृत्वा प वि प
त व नि यो ज य त् ॥ २० ॥ यथा शा क ल था ल बो य शे व व त् ॥ मे घो धा न्यं त नि ये व सि त रो द श मी र रा ॥ २१ ॥ प्रजा नां च त
था व द्वि क्ष यो ष्वे व वि ज ह ॥ ए ते न वा स मा र वा ता ए व सा का द ते भू ह ॥ २२ ॥ शा कौ व दे सु भू
शि त प र्व मे १ भा ग मा ह रे त् ॥ दि द्यो २ ह ये १५ सं यो ज्य शु धा व्या क म रो भ वे त् ॥ २३ ॥ दु य्या तृ षा त
था नी दा म्ना ल स्यो ध्य म यं च क ॥ रा ति को ध त म लो भ उ सा द र्थ त था द स ॥ २४ ॥ नि र से जो र स श्वै

भास्व

व्यवापंधूयं व तु ॥ देस ॥ विक्रमा कन्यका मगि इ भा स पु ग राय विषये सतं ॥ अदि ७ रो धम व लोक्य स
प दे त त नि शुभा शुभै ॥ २५ ॥ अग्नि २ वेद ४ सर प व हि ३ भिर्म ह जा य ते ख तु मु भि क्ष म त्त म ॥ व
दि द र अ वि धु १ प यो १ धा अं दु गो त्र प ति भि र्भ यं म ह त ॥ २६ ॥ इति श्री पद्म सिद्धा ने सारे भास्वति
कर रो य ह क्वा दिका र दिति य ॥ २ ॥ ॥ जि हा दुरा ३० प्रे ष मु र्वा क्क मा सा दि ने स मे ता म तु का स रो
ना ॥ पु र द्मे त त्र ग ७ भ क रो षा वा रा भ वं स क म् ता पु रा थ ॥ १ ॥ च द्रा १ श्री २ व द्दि ३ मु ग ४ भु त पू र रा द्
स्व द् त की द्द ष द्द भु त प वा रा प रि ष य प थ य था क्क मे रा ॥ ये वा दि रा मि तु ख र म ३० गु रो वु दे या भू
क श के श सा हि ना भ र्वा ति दु व द् ॥ २ ॥ स र्ये ख र्वा ति थ य वु दे या प थ क्क ता प्रा १०० क म

राम
४

[illegible]

[illegible]

विद्याकर्त्तानि नित्यं ॥१॥ दिने दिने हर्गणारूपं यत्कोसप्रेव ॥ सूर्य्यचवतदमिदो ६० खखन्दुकेन्दु १०० युते
प्रकुर्यात्पाग्वत्स्फुटं कार्यमिति प्रसाध्य ॥१॥ इति श्रीपंचशिद्धांतसारे भास्वकारोपचागतयनाधिकारतु
तिय ॥३॥ ॥ भौमस्वरूपं गुणकृता ४ प्रयुनर्धुवदाविशता ३० सहिन ॥ अष्टाष्ट ८८ सखखखाम ३०० नि
पक्षाक्षिभि २२ सोमयुतस्य सिद्धि ॥१॥ गुर्गुण ३ धागुगुणादसा १० मवेदाविभी ४४ लवविवर्जितम् ॥ वेदा ४
होवगुण ३ भागयुक्तसितस्य सिद्ध सहितम् ॥ शकै १४० ॥२॥ शतिर्धुव ४४ वभक्तलववध्वानितारुदयम्
मध्या ॥ भवति जीवार्कजभूमिपूत्राजवार्गवौ सिद्धगतिभवेतां ॥३॥ दिद्या १० घनो १० नाखनगां ५० ० हिनत्रि
भि ३ भृगुजोकि कुम्भमिधु ॥ अष्ट ८०० यु ५०० नद ६०० चतु ४०० सताढा पृथग्रहवद्भवो वकेडे ॥४॥ रुद्रा

भा.स.
६

११ नवेन्दु १६ द्विमा २२ नवेन्दु १९ रुद्रा ११ भोगो भव युक्त हि न ॥ यता ७ ग ७ नाग ८ त्रय ३ मूर्य १ २ निघ्न द शो
ध १० ता हि न व र्ण च मध्ये ॥ ५ ॥ पृथक् शो शिद्यो नित के द्र स द्रा वि द्या स्व सि द्धो न व त सु द स्प त् ॥ पंच ग शि
स्थितो यत्र त्रिद्यु ३ ते त्रैव कायेत् ॥ ६ ॥ ग्रह स्व शि द्धो नित कार्य दा स्पा ऋ गो ध र्णो वा सा रा मि सं द्या ॥ रा सि वि ता
का त्रि यु ३ रा त्र क्र र्था त् त दा त तः शि द्ध फ ल प्र सा र्थी ॥ ७ ॥ भो म स्य वा धि ४० न ग स प ७ से ला ११ दे व न्दु १३३ जा त्पे न्दु १२०२
ग गो ६० र्ग र्गार्था ५ ज स्य र्क्ष २ मा ति ७ ५३ क स प ७ १ ख र्त्वा ए ७ ६ श्री पंच ५३ स प्रा मि ३ न वे न्दु व १९ स्मृ ता ॥ ८ ॥ ग रु द्पा
१६ खा मि ३० ग न्न र्ग च ३ ४ ड वं न्दु यो ३ द्द रा म य मा २३ व पां १६ का र भृ ग दि वे दा ४२ क ग जा ८ १ ख सूर्य १२० बो मा
ह १५ ना गे न्दु १४८ भ भू १२ ७ वि मे ला ७ ३ ॥ ९ ॥ श ति दि सो द्या १० क र्प मा २१ न वे न्दु १६ दि भू म यो १२ मं ग ल ८ म

राम
६

मध्य ४ आश्वः ॥ रव स्व य ७ घ त वति ९० रविमि दो के देश त १०० भू म म रा र व मि द्वा ० ॥ २४ १० पादौ न द ग् १ ॥
४५ रा म घ नौ ३ १७ स्व मे धौ ० १७ आ दौ ३ १७ र व स प्ता ० १७ व नि ना दि का ना त्र यो घ ना ३ १७ वि श्व इ भा ग्न या श्व १३
३८ त्र यो घ ना ३ १७ पंच न षा ५ १२० गु ना द्वा ३ १७ ११ कु जा दि सि धु स्प च भू क्त यो मि रु क्त स्मृ ति सै र्ग रा ति
प्र वि नैः ॥ घ ना १७ ग ७ ना ग ८ त्रि ३ र वि १२ घृ भू क्ति भौ ग्पा रु ता या र व श ता १००० प्र ल ध्वं ॥ १२ ॥ ७ ने नु ष रा दे स हि तो
न्य था नौः स द स्फु टा भु क्ति रि यं कु जा देः ॥ म द स्फु टा सि धु ग तो वि श्वो ध्याः प्रा ग्ब त्कृ ता भो ग्प रु ता त्रा तां १०० प्रा ग् १३ ॥
व को ल्य भो ग्प ह मृ नं य था स्या द्वा क्रा ति वा रे वि य रि त्त सो ध्ये ॥ भा दि कृ त द्यौं क ह तो ग द्वा स्या रा स्या दि
र के ९ गु ति त कृ ता ५ ॥ १४ ॥ भा दि र्भ व द्वा दि षु त सि हार म रा क ते रा सि म्बे रा त्त चं १०० वि श्व
१३ श्वि र ग ध र्व ५ द सा ग द्वा सा सै १२ च का र्ध के नु क्षि ति जा ति सु र्व ॥ १५ ॥ वट् बं ह यो ३८ म द र १२ रा त्त

भा. ख.

७

भार्थापद वेदाधिना २४ सपरस ६२ कमरा ॥ स्वशिष्यकेन्दु रपतु मउत्वा ह्रीपूर्वापरा क का ग वा स र म् ॥ १९॥
वव्याधि भूपाक गुणा कुदश्याश्च का दितः प्रा क्पा यो सग स्यात् ए वं ज भृ ग्वो र्वसु प च षट् भा त्पा गुणा षे पर
तो धि को की त् ॥ १७ ॥ भौ मा ग द्ध ति व की त् सु चि म रा रितौ ६५३ घ मि घो न्वि ते त द्ध वृ त्त सु त स्र यो द श मू नोः
७१६ जी वो रि ष द् प र्व त ७६६ मु क रे व सु र से ६५० षा सु त न यो व द्धि नु ना गे ८१३ पू न कौ टि ल्प पारि द्यु त्पः
ष्क ल ग ति र्मा गि र्भ वे छो धि ते ॥ १८ ॥ भौ मा स्त द ह न ग्र हे ८३ स्व ज ल दे १७० सो म्या रि वे दे ५६ ग र्ग यो म ष्यो ८१
भृ ग्व्यो य न्यो रि उ र्से ६६ के न्दु स्य मि द्यो नि ते ॥ ल ष्ठ से नु शि ज। त्रि प न्ना रा र से ६८३ का ष्ठा रि यो
६१० भा र्ज वे त स्मि न् रु द्ध १२०० वि शो मि ते स मु द यं जा ति कु वं षे च रा ॥ १९ ॥ ण त्र प्र मा ६१२ त त्
२५ ह त्ता र व र्वा को ८०० शु क्रा त्पु टा के म स जो यदि स्या त् ॥ या म्वा त दा स्या दु द यो नि सां ते पु न र

राम

७

सप्तसु रात्रि संतु ॥ २० ॥ अथ पृथग्म श्राद्ध त ७ म उदि म १० मिला कु वं यु क् दारि तं २ त्नु च जा २७०० सा सौ
अ ते रा दुर वि प्र ति या न्ना ३ यो गा त सि ग न द न ॥ २१ ॥ वा त क् वा र्ध ३ दि गु रा क्त ५ द्या द सा १०
प्र मु क्ते भ ग ना स जे नु ॥ ग द्द द सा व क्त ग ति स्यु र ट स्या त् भा दि स्यु व जा ३ १ २५० घु त स्यु यु क् ॥ २२ ॥
भा क् वं कु व के द्युः स्या दि यु के द्युः स्यु र ट म ह ॥ कु व सि घ्रा त रं कू र्थी स्यु र ट भु क्त्वा वि मा जि त ३ ॥ ल ३
प र ल दि ना डि स्या द धी के कु व के द्यु के ध ना दि न ग शो कू र्थी द सा दि वे वि के पु न ॥ २४ ॥ ग हे व क्त ग ते मा
मे या ते त क्त्वा हु के त था ॥ अ सौ द य ध नं स स्या त् व न्न यै पू ण च क के ॥ २५ ॥ मि न मे वे ग ते च डे श
न तं दि क्षि णो न न ॥ अ न्य चो न ए स गी त्वा स न ल च सु क्ते न यो ॥ २६ ॥ इ ति श्री प च सि द्धा त सा रे भा स
ति क ए णो १६ स्यु ग वि का र ॥ ४ ॥ ॥ रु पा दि वे दा ४२९ री त च्छ क्ता द्वा दि शो य वे कु त्प न भो गे रा मे ३६०० स
न्या त्म कि या ३२ यु ता दि भ क्ता श ते त १०० ल धी स्य न श का लु ॥ १ ॥ स ह ग री ते यु त मे व य म दं द्यु नि शो प मा रा ॥ अथ वृद्ध

भास
८

स १
तो गात कुमि १०७ गजा वा मुदे १२ स्वलो ग ते थो त दक्षि सो मु ॥ २ ॥ तत वरामं ३० कर्म स्व द वासा
ई ५५ स व ३५ सदलं १५ वरार्द्ध ॥ प ल प्रभा ६ १२ द्यं सर व टु य मा २५ ५ पं व वेन्दु १५ ते स स्व मृ राणा
न गोला त् ॥ ३ ॥ अह द ल व स मि तो नि शा ई त यो ग ते थं त रि ते न तं व ॥ व द घे द च रा दं द रा २० भा ग द्वि न
या म्या हि रा मं ३ रा मु तं द रा १० स ॥ ४ ॥ त द क्षि हि ना क्षि वि यु कं भा नो रु द य द क्षि रा तः प्र भा स्या त् ॥ द्वा या द
रा १० द्वा रा त १०० सं यु ता र म थ्य प्र भा ना भ व ति ह रा कु ॥ ५ ॥ रा ता १०० ह द ल त स दा स म ह र्ज ते थो घ टि का दि
काल ॥ स्व वेन्दु १०० नि द्या घ द ला ह ते थ्य ना ग्रा स म थ्य प्र भा ना स मे तं ॥ ६ ॥ स ते १०० त तं त द स १० मि वि भ कं ल
अं गु ला घा भ व ति सी ता भा ॥ ल ग्न त सू र्यो द य तः प्र सा थ्य स्व भो द ये सो र दी ना नु या ता त् ॥ ७ ॥ स ग्ग रा य य थ्या य सी
जु का न् रा त् ग जै वि भ ज्य ऊ र वो प्र ता ज्य ॥ स रा धि यु मे २२ ५ वि भ गो य ल द्वा नि का क्षि वे द य का न क्रि या दि न् ॥ ८ ॥

रा म
८

सम्पत् राघ भाग्यो दयकेन शेष विभज्यत राशि यमैः २२५ प्रलब्ध ॥ भुक्तो दये क्य स हित युक्त योऽपि विभ
न युक्त ॥ १८ ॥ सूर्यो दया दयटिका युक्त योऽपि विभज्यते को न खर से युग राघ ॥ तत क्रिया दिनु या विरोध भूत कालो दय भा ५४
य ॥ १० ॥ से का र व द्या दिनु या वि धा य भिग्यो दया प्रभवति कुल गं ॥ लगे प्रजो ज्य र स द्भवति ल गं जा मित्र से सं कथि तो मु ति द्ये ॥ ११ ॥
य स ह २० ८ म क न दाम्बि २९९ विर दं ३२ ३ व र ष डो चितं यु क्ति ना ॥ १२ ॥ जा दि को द या न व क मो त क मा त ले को द ये वू द व दे
व सा धा ष ष्या वि भज्ये ति य थो दि तं त त् ॥ स्यात् प्रा क्त क या ले न न ते न हि नं यु क्त यु क्त यो र ज रे न ते न ॥ न सु द्वा ते न तं यु तो ज्य ष
वि पु न स त्र न त वि रो धा ॥ १२ ॥ ल को द ये स त्र यु न प्र सा ध्यं ल गं य थ मो क्त मा मे ॥ म धो विं शे र स भं य थो ज्य या ताल ल गं
भु न यो व दं ति ॥ १३ ॥ ल गं र त् थो वि सु षं क ल व प्र ध्या ज्ञा मी त्र क सं वि रा ध्य ॥ रं भं वि ल ग्ना व वि रो धा रो षं गं रां र व के
य क्त म त प्र योज्य ॥ १४ ॥ भा व दू यो यो गि द ल स त् सं धि स त्र मि त स्या द क् लो म हे द् ॥ व द्वा मि नि प्र य ल भा र्ति ता व ल क व
मि धि दि ह द दि ना दि ॥ १५ ॥ दि गु रा वि षु द्वा या वि भ ज्य क्त म स सि धा ॥ म को द व कु रौ ल वि व र ष रा डा वि व ना टिका

भास्व

८

॥ १६ ॥ व रवर्षे न्यासी त्रिरदांश मोक्तमात्र ॥ च रवराशे निष्कृतं विना श्रेयाको दयात् ॥ १७ ॥ ॥ इति श्रीप
वसिष्ठा तप्तारे भास्वतिक र राय हस्य सिद्धि साधिका ॥ ५ ॥ ॥ द्वि २ ॥ द्यौरविषर्क कृता ५ वयु कृदि ५१०
मिस्व मास ८ युदिना कृवाद्य ॥ त मोयता ५ कोत्तव आ २००० दसो म्या या म्या सरल्या स्वदरा स हि न ॥ ११ ॥
मा न द्वि मांरो ८० गति र विदिनादि १० व्यस ह्यमानं ॥ त यो गत दुसर जितं वयरा सुधारे सुदूतयर्च
स धौ ॥ २ ॥ स्व द्वाद मांरो १२ नितमकं मानं खजाति २२ भा गो नितमी दु मान ॥ वि ३ ॥ ये दु भोग्या
धन स्वा २०८ ॥ वि तोर्क भोग्या गति ३ भा गो न विवजि ता गो ॥ ३ ॥ स्थि या दु मगा ५ द त मि द् रवं राउ स्व
ध ५० युक्रवराउ विवराउ तं च ॥ हि न धयर्वरा शी रस्मे म्प थु मुक्ति धु त दि द्य काल ॥ ५ ॥ ग्रा म दि राति ३० रा म्पि
साम्पुट माने न भा जितं विद्या ॥ ग्रा सो न खराउ इव दू ली गरा पुषर्पे व ५० पु न्दरा हरी कल विमर्छ ॥ ॥ ति न

राम

दिना दुदिन या लेन स्या २ दिन पूर्व नृवमनं ॥ या न दि न दले ने न म क
५ गत ५ ॥ ५ ॥ २३ ॥ द रा म ॥ २२ ॥ २५ रा ह मान

धनपर्वविचदुभात्रोत्रिमिलनोमिलननाडिकासु ॥ ५ ॥ द्वि द्वा दशो विद्यामित्रे समरासि गते भवा ॥ तथा ब्रह्मकाष्ठके चैव
ग्रहाचद्वस्य यो ॥ ६ ॥ इति श्रीपंचमिद्वाने मोहास्त्रनिम्ना नो ब्रह्मराष्ट्रिका ॥ ॥ ६ ॥ न ता दश १० व्याजिन २५ यु
न ता सत १२ वन तेन यु तन तं य ॥ ब्रह्मका ८० नि द्यो न द्यु त स्य भा नो ध्या ति पु नी यो ध सर य सा ध्य ॥ २ ॥ त
तवा क ८० नि द्ये तु य रो धिके ५ का द के रा त द्या कृत यं २५५०० दे या ॥ त त्वा क ८० द्वि ना द न्य ता की द्वि ना रो ध्यं
स रो दि ग्गु रि ता त य द त्वा ॥ २ ॥ पृथक् रा ता रा १०० धि क रु द्ध भ क्ता स्त द धि यो गा तं रि तं न ति स्या ॥ त त्वा व न दि
गु रि ता त गु रा तं ही न ध न वा क्य र यो ख रा रो ॥ ३ ॥ त त स्त म स प्र यु तं द रा स्या द्य रा व नि त्य त र य क् र स्यु र द स्या
त् ॥ मा तं र वे र्भो ग्य यु ता ग न न्य ८६ स्ता ग्रा ह को ध स्ति त व र न्य ॥ ४ ॥ ग्रा सा श तु ४ व्या स वि तु ख रा मे ३० ग्रा
मे क ल द्ये स्थि त म र्द ना र्ध ॥ इति सु र्यो ग्रा ह रो वि रो धः रो ध स्तु व द्यः ग्रा हा दि वि न्य ॥ ५ ॥ त त्वा व न सौ म्य श

भा.स.
१०

ननु या प्र सो २५

राति धाय धा प्रान नष्ट वंशिति उभा नो ॥ स्यात्प्रा दुर्के ता नि युतं प्र कूर्यो स्य रीथ मुक्त ४ अवे दिन स्य ॥ ५ ॥
इति श्री पं वसिष्ठा त सारे भारवतिक र सो सूत्र ग्रह सा धि कार ॥ ७ ॥ ख खेन्दु व दा ५१०० धिक भा स्कर ए प्राम्ब त
अ वक्तो २७०० प्र दि रा स र स्य ॥ त र वा ४० भा ग स्य इति सु धा रो य था दि स्य स प्र त ख रं रा ॥ १ ॥ म ध्य त्र प्र
क्य र न त स्या द थ स त कृति स तु ज्यो न्म दि रो क्र मे रा यो गो त र वा व स ना र वि द्यो ॥ २ ॥ यान सा दे ख न त स्य पं च
५ भा गो न दि गुरो ब हु ता गृ हा द्या ॥ र द्वा र्क यो दि मा ना गृ ह स गृ रा सा र व र वा ग २०० भ क्ता व ल नां य ज्ञा
ति ॥ ३ ॥ र द्वा र्क दि गृ स म स गृ ल स्य स था प स ले ल न गृ स वे ॥ ग ध्या द द द्वा सि ता त रा रो त स म्मो
इ स्रु वे न र विन्दु ख रा ड ॥ ४ ॥ व ल नां गृ द्वा र्क यो दि मा ना गृ ह स गृ रा सा र व र वा ग २०० भ क्ता व ल नां य ज्ञा
ति ॥ ५ ॥ स्या रा दु नि द्ये भा व ति र स ध रे ४ भ ॥ का वं गृ लं प्रा क्य र यो स द ग्रा त् ॥ स्य री थ मो द स स

र.म.
१०

सांयथा वनिविलो नो मितन क भवति ॥६॥ प्रांरांरु लै प्रश्रुत तस्थिपदं न विभाजि तं बल यत्र गुणमुस
भो यो सा तत ॥७॥ ख र्वन्धि वे ५५२०० दि घृष्टा देदि कोक्ति श्रीमुरुष तप्रस्य ॥ श्रीमान् सवानन्द
इति रमा हसर स्व ति संकर पो स मुञ्जु ॥८॥ ॥ श्री श्रीवत्सी दू ते सा रे भा स्वति कर रो परि लेका
वा धिका रा वृ जो धाय ॥९॥ ॥ श्री सा के १७२४ सुख

ASHA ARCHIVES

आश्विन नरकस्थि

1.103

ASHA ARCHIVES